

सुविचार

असफलता के डर को अपने सपनों के बीच की बाधा मत बनने दें, बल्कि उसे अपने सफल होने की प्रेरणा बनाएं।

दक्षिण भारत राष्ट्रमत

अन्नदाता को ऊर्जादाता बनाएं

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने आईएआरआई में आयोजित कृषि कार्यक्रम में किसानों के साथ संवाद करते हुए सौर ऊर्जा और भूजल पुनर्भरण के बारे में जो सुझाव दिए, उनसे भविष्य में बहुत बड़े बदलाव लाए जा सकते हैं। उन पर गंभीरता से काम करने की जरूरत है। प्रधानमंत्री ने खेत की मेड़ पर सोलर पैनल लगाने का अनूठा विचार पेश किया है। प्रायः गांवों में मेड़ संबंधी विवाद बड़े झगड़े का रूप ले लेते हैं। पहले, इस स्थिति को टालने के लिए किसान मिट्टी की ऊंची मेड़ लगाते थे, जिसमें काफी समय लगता था और खूब मेहनत करनी पड़ती थी। इसमें जमीन का काफी हिस्सा दब जाता था, जो किसी काम नहीं आता था। उसके बाद तारबंदी का दौर आया, जो अब तक जारी है। इसके तहत किसान मेड़ की जगह कटीले तार लगा देते हैं। इसमें भी काफी जगह दब जाती है। इसका एक फायदा यह होता है कि खेतों में आवारा पशु आसानी से नहीं घुस पाते, लेकिन कई बार हादसे हो जाते हैं। अगर किसान इस जगह सोलर पैनल लगवाने को प्राथमिकता दें तो इससे मेड़ संबंधी विवादों में कमी आएगी। साथ ही, किसानों की आमदनी बढ़ेगी। भारत में अन्न और ऊर्जा, दोनों की मांग बढ़ रही है। ऐसे में अन्नदाता को ऊर्जादाता बनाने का विचार क्रांतिकारी साबित हो सकता है। हमारे देश में साल के ज्यादातर महीनों में अच्छी धूप पड़ती है। जब प्रकृति हम पर इतनी मेहरबान है तो उसके वरदान का लाभ उठाना चाहिए। सोचिए, अगर भारत में खेतों की मेड़ों पर सोलर पैनल लगे होते तो अब तक कितनी बिजली बनती और देश ऊर्जा उत्पादन के क्षेत्र में दुनिया के अन्य देशों से कितना आगे होता!

खेत की मेड़ पर ये पैनल लगवाने से एक ओर जहां कृषि योग्य भूमि ज्यादा बचेगी, वहीं किसानों की क्रय क्षमता बढ़ने से ग्रामीण क्षेत्रों में मांग बढ़ेगी। इससे रोजगार के अनेक अवसरों का सृजन होगा और अर्थव्यवस्था मजबूत होगी। हालांकि शुरूआती निवेश एक बड़ी चुनौती है। अगर किसानों को ज्यादा सब्सिडी मिले और सरकार उन्हें प्रोत्साहित करे तो अगले एक दशक में ही ऊर्जा परितुष्ट्य पूरी तरह बदल सकता है। यह अनूठा विचार युवाओं को खेती से जोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। प्रायः किसान अपने बच्चों को इसलिए खेती से दूर रखना चाहते हैं, क्योंकि इसमें आमदनी को लेकर निश्चितता कम है। अगर जमीन अच्छी है, लेकिन खाद-बीज की गुणवत्ता अच्छी नहीं है तो पूरी मेहनत पर पानी फिर जाएगा। अगर सबकुछ अच्छा है, लेकिन फसल कटाई के समय बेमौसम बारिश हो गई तो भारी नुकसान हो जाएगा। अगर किसान इससे भी सुरक्षित रहा तो उपज की वाजिब कीमत मिलने में दिक्कत आती है। पर्याप्त सैन्ध्या में सोलर पैनल लगवाने से किसान के लिए खेती फायदे का सौदा बन सकती है। हर महीने बैंक खाते में रुपए आएंगे तो उसे यह उम्मीद रहेगी कि किसी भी स्थिति में मेरा हाथ खाली नहीं रहेगा। अगर उपज अच्छी हो, उसकी वाजिब कीमत मिले और स्याल सैन्ध्या से अच्छी कमाई हो जाए तो किसान समृद्ध हो सकता है। इसके साथ ही भूजल पुनर्भरण की ओर ध्यान देना चाहिए, ताकि भविष्य में सिंचाई के लिए पानी की कमी न हो। आज देश के कई इलाकों में भूजल का स्तर बहुत नीचे चला गया है। इससे खेती चौपट हो रही है। खेती के लिए धरती से जितना पानी लें, उतना पुनर्भरण कर दें तो भूजल का संतुलन बना रहेगा। इससे किसान आत्मनिर्भर बनेगा और आत्मनिर्भर भारत का निर्माण होगा।

ट्वीटर टॉक

संसद भवन परिसर में होटल फेडरेशन ऑफ राजस्थान, कोटा डिवीजन के सदस्यों से संवाद कर हाड़ौती अंचल में पर्यटन की संभावनाओं पर विचार साझा किए। भारत विविधताओं की धरती है, यहाँ की भौगोलिक, सांस्कृतिक, भाषाई और धार्मिक विविधता ही इसकी आत्मा है।

—ओम बिरला

राजस्थान में बालिका शिक्षा, सशक्तिकरण और सुरक्षा के लिए हमने अनेक पहलें कीं। ‘राजश्री योजना’ के माध्यम से बेटियों के जन्म से लेकर उनकी शिक्षा तक आर्थिक सहायता तथा ‘बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ’ के संदेश को घर-घर तक पहुंचाया।

—वसुंधरा राजे

अपने किसान, पशुपालक और मछुआरा भाई-बहनों के कल्याण के लिए हम दिन-रात मेहनत कर रहे हैं। इसी दिशा में आज दिल्ली से हजारों करोड़ रुपये की परियोजनाओं का उद्घाटन-शिलान्यास मेरे लिए गर्व का क्षण है।

—नरेंद्र मोदी

प्रेरक प्रसंग

पाप की बिक्री

एक बार कवि कालिदास बाजार में घूमने निकले। वहां उन्होंने एक स्त्री को एक घड़ा और कुछ कटोरियां लिए ग्रहकों के इंतजार में बैठे देखा। कालिदास यह देखकर परेशानी में पड़ गए। वह उस स्त्री के पास गए। उन्होंने वहां जाकर पूछा किबहन तुम क्या बेचती हो। उस स्त्री ने कहा मैं पाप बेचती हूं। मैं स्वयं लोगों से कहती हूं कि मेरे पास पाप हैं, मर्जी हो तो ले लो। लोग रुचि से ले जाते हैं। इस जबाब को सुनकर कालिदास उलझन में पड़ गए। उन्होंने पूछा कि घड़े में कैसे पाप हो सकता है? स्त्री बोली, हां होता है, जरूर होता है। देखो, मेरे आठ घड़े में आठ पाप भरे हैं। बुद्धिमान, पागलपन, लड़ाई-झगड़े, बेहोशी, विवेक का नाश, सदगुण का नाश, सुखों का अंत ओ नरक में ले जाने वाला दुष्कर्म। और भी हैरानी में पड़ते हुए कालिदास ने पूछा, अरे बहन। इतने सारे पाप बताती हैं आप, तो आखिर इन घड़ों में है क्या? स्त्री बोली, शराब, वह शराब ही उन सभी पापों की जन्मनी है। जो शराब पीता है, वह व्यक्ति इन आठ पापों का शिकार हो जाता है। कालिदास उस स्त्री की चतुराई को देखकर दंग रह गए।

सामयिक

महिलाओं को भी हृदय रोगों से सावचेत रहने की जरूरत

डॉ. नीलू तिवारी

मोबाइल : 94139 07005

हाल ही में पुरुषों की तरह महिलाओं में भी हार्ट अटैक की कई घटनाएं सामने आईं। न केवल शहरी क्षेत्रों में, बल्कि ग्रामीण क्षेत्रों की महिलाओं को भी दिल के दौरे पड़े। हालांकि शहरी क्षेत्रों के मुकाबले ग्रामीण क्षेत्रों में हार्ट अटैक की दर कम रही। विश्व स्वास्थ्य संगठन की एक रिपोर्ट के अनुसार, दुनिया भर में हर साल करीब 1.8 करोड़ लोग हृदय रोगों से मरते हैं, जिनमें लगभग 47 प्रतिशत महिलाएं होती हैं। भारत की स्थिति इससे भी गंभीर है। भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद के अनुसार, देश में हर साल लगभग 30 लाख महिलाएं हृदय संबंधी बीमारियों का शिकार होती हैं। इनमें से करीब 35 प्रतिशत की मृत्यु समय पर इलाज न मिलने के कारण हो जाती है। यह आंकड़े साबित करते हैं कि महिलाओं की हृदय स्थिति केवल एक चिकित्सीय विषय नहीं, बल्कि सामाजिक और राष्ट्रीय स्वास्थ्य सुरक्षा का महत्वपूर्ण पहलू है।

ग्रामीण महिलाओं की हृदय स्थिति विशेष रूप से चिंताजनक है। वे दिनभर खेतों, पशुपालन और घरेलू कार्यों में लगी रहती हैं, जिससे शारीरिक श्रम तो बहुत होता है, लेकिन उचित पोषण और स्वास्थ्य सुविधाओं की भारी कमी रहती है। आईसीएमआर के एक हालिया सर्वेक्षण के अनुसार, ग्रामीण क्षेत्रों की 60 प्रतिशत महिलाएं आयरन और प्रोटीन की कमी से ग्रस्त हैं। यह पोषण की कमी सीधे हृदय की कार्यप्रणाली को प्रभावित करती है और दिल की बीमारियों का खतरा बढ़ाती है। इसके अलावा, गांवों में स्वास्थ्य सेवाओं की कमी, अस्पतालों की दूरी और जागरूकता का अभाव इस समस्या को और गहरा बना देता है। कई बार महिलाएं छाती में दर्द या धड़कन की अनियमितता को साधारण कमजोरी समझकर

नजरअंदाज कर देती हैं और जब तक इलाज कराती हैं, तब तक स्थिति बहुत गंभीर हो चुकी होती है।

वहीं दूसरी ओर, शहरी महिलाओं की स्थिति अलग समस्याओं से भरी है। उन्हें आधुनिक चिकित्सा सुविधाएं तो उपलब्ध हैं, लेकिन उनकी जीवनशैली हृदय रोग का सबसे बड़ा कारण बन रही है। फास्ट फूड का बढ़ता सेवन, व्यायाम की कमी, देर रात तक जागने और अत्यधिक तनाव की आदतें शहरी महिलाओं को हृदय रोग की ओर धकेल रही हैं। भारतीय हृदय संघ की हालिया जारी रिपोर्ट के अनुसार, 40 प्रतिशत शहरी महिलाएं उच्च रक्तचाप और मोटापे की शिकार हैं, जो हार्ट अटैक का सीधा कारण है। इसके अलावा, नौकरी और परिवार की दोहरी जिम्मेदारी मानसिक दबाव को और बढ़ाती है, जिससे उनका हृदय जोखिम में रहता है।

ग्रामीण और शहरी महिलाओं की परिस्थितियां अलग हैं, लेकिन एक समानता दोनों में देखी जाती है कि वे अपने स्वास्थ्य को प्राथमिकता नहीं देती। यह विषय आज इसलिए प्रासंगिक है, क्योंकि महिलाओं की हृदय स्थिति केवल उनका व्यक्तिगत स्वास्थ्य नहीं, बल्कि पूरे परिवार और समाज की सेहत से जुड़ी है। ग्रामीण क्षेत्रों में स्वास्थ्य सेवाओं की पहुंच और जागरूकता अभियान चलाने की जरूरत है, वहीं शहरी महिलाओं को संतुलित आहार, योग, व्यायाम और तनावमुक्त जीवन अपनाने की दिशा में प्रेरित करना होगा। ग्रामीण महिलाएं पोषण और इलाज की कमी से जूझ रही

हैं, जबकि शहरी महिलाएं जीवनशैली और तनाव की वजह से प्रभावित हैं। दोनों ही वर्गों में यह मानसिकता गहरी है कि परिवार पहले और स्वयं बाद में, जिसके कारण उनकी बीमारियां देर से पहचान में आती हैं और इलाज में भी देरी होती है। असल में देश में महिलाओं में भी हृदय रोग की स्थिति गंभीर होती जा रही है। राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण के अनुसार, महिलाओं में मोटापा, उच्च रक्तचाप और उच्च रक्त शर्करा जैसे जोखिम बढ़ रहे हैं। विशेष रूप से शहरी क्षेत्रों की महिलाओं में इन जोखिम कारकों की दर अधिक पाई गई है। इधर, 12,000 से अधिक महिलाओं के लिए मुफ्त ईसीजी स्क्रीनिंग आयोजित की गई है। यह पहल विशेष रूप से शहरी क्षेत्रों में महिलाओं के बीच हृदय स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता बढ़ाने के लिए की गई थी। इस अभियान के माध्यम से महिलाओं को हृदय रोगों के जोखिमों और उनकी रोकथाम के उपायों के बारे में जानकारी प्रदान की गई। इस अभियान के तहत स्वास्थ्य शिविरों, पोषण परिचार अभियान की शुरुआत की है, जो विशेष रूप से ग्रामीण और आदिवासी महिलाओं के लिए है। इस अभियान के तहत स्वास्थ्य शिविरों, पोषण समर्थन, स्वच्छता शिक्षा और मातृ देखभाल के माध्यम से महिलाओं की स्वास्थ्य स्थिति में सुधार लाने का प्रयास किया जा रहा है। यह पहल महिलाओं को स्वास्थ्य के प्रति जागरूक करने और उन्हें परिवार और समुदाय में नेतृत्व की भूमिका निभाने के लिए प्रेरित करती है।

महिलाएं भारतीय समाज की आधारशिला हैं। वे परिवार की नींव होती हैं, उनका स्वस्थ रहना पूरे समाज के लिए आवश्यक है, लेकिन जब बात उनके स्वास्थ्य विशेषकर हृदय स्वास्थ्य की आती है, तो वे अक्सर उपेक्षा का शिकार होती हैं। यह केवल स्वास्थ्य की ही नहीं, बल्कि सामाजिक जागरूकता का भी विषय है। बदलती जीवनशैली, तनाव और असंतुलित आहार के कारण ग्रामीण और शहरी महिलाओं अलग-अलग चुनौतियों का सामना करती हैं। इसलिए इस विषय पर ध्यान देना

मंथन

शिक्षा, भाषा और संस्कृति देश की समृद्धि का पैमाना

संजीव ठाकुर

मोबाइल : 90094 15415

शिक्षा सदैव समाज, संस्कृति और सभ्यताओं के साथ परिवर्तनशील और प्रगतिशील रही है। यह न केवल व्यक्तिगत उन्नति का माध्यम है, बल्कि समाज और राष्ट्र के विकास की आधारशिला भी है। शिक्षा, ज्ञान, कला, साहित्य और संस्कृति को देश-विदेश की सीमाओं में बाँधना संभव नहीं है। यह असीमित भंडार है, जिसमें आकाशीय ऊँचाइयों भी शामिल हैं। न केवल इसकी महारई को नापा जा सकता है, न ही इसकी ऊँचाई को देखा जा सकता है। शिक्षा और ज्ञान की यह विशालता मानव जीवन में अनंत संभावनाओं के द्वार खोलती है।

पूर्वी सभ्यता, विशेषकर भारतीय परंपरा, जहाँ अध्यात्म, वेद, पुराण और योग पर आधारित है, वहीं पश्चिमी सभ्यता विज्ञान, तकनीकी नवाचार और अनुष्ठित रहस्यमय खोजों पर आधारित है। इन दोनों सभ्यताओं ने अपने-अपने क्षेत्र में मानव

जीवन को बदलने वाले अनमोल योगदान दिए हैं। उदाहरण स्वरूप, पश्चिमी विज्ञान ने मानव को चंद्रमा पर पहुँचने का अवसर दिया और आधुनिक तकनीक जैसे हवाई जहाज, इंजन, रेडियो और डिजिटल तकनीक से जीवन को सरल और उन्नत बनाया। वहीं, भारतीय ज्ञान और दर्शन ने योग, आयुर्वेद, ध्यान और जीवन मूल्यों के माध्यम से मानव जीवन में शांति, संतुलन और आत्मसाक्षात्कार की दिशा प्रदान की। इस प्रकार शिक्षा, भाषा और ज्ञान ने पूर्व और पश्चिम के बीच समन्वय स्थापित किया। पश्चिम ने भारतीय दर्शन, आयुर्वेद और योग को अपनाकर अपनी जीवनशैली में संतुलन पाया, और भारत ने पश्चिम के विज्ञान और तकनीकी ज्ञान को अपनाकर विकास की नई ऊँचाइयों को छुआ। शिक्षा और भाषा सदैव अज्ञानता के तमस में प्रकाश की तरह कार्य करती रही है। यह नवजीवन की विकास धारा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है और समाज में सतत प्रगति का मार्ग प्रशस्त करती है।

भारतीय संस्कृति और दर्शन में जैन, बौद्ध, नव्य वेदांत और आधुनिक चिंतन ने समाज में नवयुग की कल्पना को साकार किया। वहीं पश्चिम

के दार्शनिक और चिंतक जैसे प्लूटो, अरस्तु, सुकरात, कार्ल मार्क्स और लेनिन ने सामाजिक और राजनीतिक विकास के सिद्धांत प्रतिपादित किए, जिन्हें पूरी दुनिया ने अपनाया। इस प्रकार, दोनों सभ्यताओं में ज्ञान और विचारों का आदान-प्रदान निरंतर जारी रहा। भारतीय समाज में हमेशा सुधार और नवीन युक्तियों को अपनाने की क्षमता रही है।

स्वतंत्रता पूर्व और स्वतंत्रता पश्चात राजनीति और समाज में हुए परिवर्तन इसका सजीव उदाहरण हैं। उदाहरण के लिए, गांधीजी ने सत्याग्रह और अहिंसा के माध्यम से सामाजिक परिवर्तन को साकार किया, जबकि जवाहरलाल नेहरू ने विज्ञान और तकनीक के माध्यम से आधुनिक भारत की नींव रखी। सुभाष चंद्र बोस और बाल गंगाधर तिलक ने स्वतंत्रता संग्राम में नई ऊर्जा और दिशा प्रदान की। इन सबके प्रयासों ने भारत को विश्व पटल पर एक नया स्वरूप और पहचान दी।

पाश्चात्य ज्ञान ने हमें अपने आडंबर, अंधविश्वास और रूढ़िवादिता पर विजय पाने में मदद की। उदाहरण के लिए, वारसु, जन्मकुंडली

नजरिया

सोना कितना सोना है, सोने जैसा तेरा मन

मनोज कुमार अग्रवाल

मोबाइल : 9219179431

दे पायेगा? वर्ल्ड गोल्ड कार्डसल का मानना है कि सोने में अब भी उतना निवेश नहीं हो रहा, जितना होना चाहिए। वैश्विक निजी निवेश में सोने की हिस्सेदारी मात्र 1-2 फीसदी ही है, जबकि केंद्रीय बैंकों में सोने का रिजर्व 10-20 फीसदी के बीच रहा है। फिर भी यह दिलचस्प और हैरान करने वाला तथ्य है कि 2022 की दीपावली के बाद से सोने की कीमतें लगातार बढ़ रही हैं।

विशेषज्ञों का आकलन है कि 2026 की दीपावली तक सोने के दाम और बढ़ सकते हैं, क्योंकि बड़े निवेशक और दुनिया भर के केंद्रीय बैंक सोने में लगातार निवेश कर रहे हैं। चीन का पीपुल्स बैंक ऑफ चाइना सितंबर में लगातार 11 वें महीने सोने का शुद्ध खरीददार रहा है। यह डॉलर पर निभरता कम करने की चीन की रणनीति का हिस्सा है। वर्ष 2025 में

अभी तक घरेलू बाजार में सोने का रिटर्न करीब 60 फीसदी रहा है, जबकि अंतरराष्ट्रीय बाजार में यह रिटर्न करीब 53 फीसदी रहा है। गोल्ड ईटीएफ में भी इस साल अभी तक 17 फीसदी निवेश बढ़ चुका है। सितंबर में गोल्ड ईटीएफ में 1.53 लाख करोड़ रुपये का निवेश हुआ, जोकि एक माह में सबसे अधिक है। मौजूदा दौर में सोना इतना महंगा और अनिवार्य हो गया है कि देशों की अर्थव्यवस्था की बुनियाद है, लेकिन आम आदमी के लिए मुसीबत, परेशानी का प्रतीक बन गया है।

दरअसल सोने के दाम अमरीका से ही शुरू होते हैं, क्योंकि अंतरराष्ट्रीय कारोबार डॉलर में ही होता है। जनवरी, 2025 में जब ट्रंप ने अमरीकी राष्ट्रपति पद की शपथ ली थी, तो सोना 2700 डॉलर प्रति आउंस था। उनके 8 माह के कार्यकाल में सोना महंगा

ही होता गया है। राष्ट्रपति ट्रंप ने टैरिफ की बात शुरू की, तो देशों में अनिश्चितता फैलने लगी, नतीजतन सोना महंगा होता गया। देशों ने सोना खरीदना तेज किया, ताकि कमजोर होते डॉलर के विकल्प के रूप में सोने का भंडार हो। वैसे सोना पूर्व में भी महंगा और सरस्ता होता आया है। वर्ष 1970-80 का दौर याद कीजिए, जब सोना कई गुना महंगा हो गया था और वित्तीय सलाहकारों ने सोना खरीदने की सलाह दी थी, लेकिन 1999 तक सोने के दाम अचानक ध्वस्त हुए, तो निवेश भी घटा।

वर्ष 1990-91 के दौर में भारत सरकार को सोना गिरवी रखना पड़ा था, ताकि सामान्य खर्च चलाए जा सके। फिर उदारीकरण का दौर आया, सोना वापस ले लिया गया, भारत की अर्थव्यवस्था वैश्विक स्तर पर खुल गई। आज देश में सोने का भंडार बढ़ रहा है। रिजर्व बैंक के पास 880 मीट्रिक टन सोने का भंडार है। आरबीआई अपने फॉरवर्ड एसेस को डाईवर्सिफाई कर रहा है ताकि डॉलर का प्रभावी विकल्प मौजूद रहे। कई अन्य देशों के केंद्रीय बैंक वहीं कर रहे हैं। ऐसा करने देशों की आर्थिक स्थिरता के लिए जरूरी हो सकता है, लेकिन यही वात आम आदमी के लिए बड़ा संकट बन गयी है। शादी-व्याह में अब सोने का उपहार देना आम आदमी के बहुत कठिन हो गया है, लेकिन फिर भी हमारे नीति-निर्वाज और संस्कार ऐसे हैं कि महंगे सोने को भी खरीदना पड़ेगा क्योंकि परंपराओं को निभाना भी जरूरी है। उधर जानकार लोगों का मानना है कि महंगाई के बावजूद सोना चलन में रहेगा हालांकि अधिक महंगाई के साथ ही सिलवट का भी सिलसिला बढेगा। आम आदमी सोने को खरीद पाएगा इसमें शंका उचित है फिर तो बस यही कहना होगा सोना कितना सोना है सोने जैसा तेरा मन..।



सही मार्ग पर चलने के लिए ज्ञान, दर्शन और चरित्र का स्मरण जरूरी : समकित मुनि

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

चेन्नई। यहां पुरुषवाक़्म स्थित एएमकेएम जैन मेमोरियल ट्रस्ट में विराजमान डॉ. समकित मुनिजी म.सा. के सान्निध्य में मंगलवार को उत्तराध्ययन सूत्र आराधना का 14वां दिवस मनाया गया। प्रवचन के दौरान मुनिश्री ने जीवन की यात्रा में सही दिशा और सोच के महत्व पर विस्तार से प्रकाश डाला। मुनिश्री ने कहा कि जब भी जीवन की यात्रा प्रारंभ

करें, तो यह विचार अवश्य करें कि मैं किसका सहारा लेकर आगे बढ़ रहा हूं, और मेरा आलंबन क्या है। उन्होंने कहा कि यात्रा शुरू करने से पहले तीन बातों को हमेशा याद रखना चाहिए। पहली – यह स्मरण रहे कि मैं कौन हूं। यदि आप जैन हैं, तो चाहे कहीं भी जाएं, कभी गलत मार्ग नहीं अपनाएं। दूसरी – आपके आराध्य कौन हैं, यानी देव, गुरु और धर्म। यदि किसी को देव, गुरु और धर्म में सच्ची श्रद्धा होती है, तो वह व्यक्ति कभी गलत दिशा में आगे नहीं बढ़ सकता। तीसरी अपने परिवार के चरित्र को

याद रखें। उन्होंने कहा कि जिसे अपने कुल, अपने संस्कार और अपने चरित्र की पहचान होती है, वह जीवन में कभी भटकता नहीं। मुनिश्री ने कहा कि बच्चे को भी इन तीन बातों की चुड़ी पिला दी जाए ज्ञान, दर्शन और चरित्र। तो वह चाहे जहां भी रहे, सही मार्ग पर चलता रहेगा। उन्होंने बताया कि जो व्यक्ति इन तीन बातों को भूल जाता है, वही गलत रास्ते पर बढ़ जाता है। मुनिश्री ने आगे कहा कि जीवन में अंधा बनकर नहीं, आंखें खोलकर चलना चाहिए। जब व्यक्ति जागरूक होकर अपने कर्मों

और निर्णयों को देखता है, तब वह अनेक दुर्घटनाओं और गलतियों से बच सकता है।

मुनिश्री ने कहा कि जब हम बोलें, तो हमारे शब्दों में क्रोध का सहारा न हो, न ही अभिमान का। वाणी का उपयोग इस प्रकार करें कि किसी का मन न दुखे। जो वाणी आशीर्वाद बन जाए, वही सच्ची साधना कहलाती है। उन्होंने यह भी बताया कि जीवन में हमें हमेशा यह समझना चाहिए कि क्या ग्रहण करना है, और क्या त्याग देना है। उन्होंने कहा – हमेशा वही वस्तु या विचार ग्रहण

करो जो निर्दोष हो। जो चीज तुम्हारे काम की नहीं है, उसे मत लो – भले ही कोई स्वयं दे रहा हो। आवश्यकता न हो तो उसे अस्वीकार करना ही बुद्धिमानी है। अंत में मुनिश्री ने कहा कि यदि मन, शरीर और वाणी। इन तीनों को अशुभ से दूर रख लिया जाए, तो जीवन में किसी भी प्रकार की बाधा नहीं रह जाती। जब वाणी में मधुरता, मन में शुद्धता और कर्म में सच्चाई आती है, तब व्यक्ति का जीवन स्वयं उदाहरण बन जाता है। कार्यक्रम का संचालन मंत्री विनयचंद पावेचा ने किया।



चेन्नई में दक्षिण भारत ज़ोन-1 युवा सम्मेलन का आयोजन

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

चेन्नई। श्री ऑल इंडिया बेतांबर स्थानकवासी जैन कॉन्फ़्रेस, नई दिल्ली – ज़ोन-1 युवा शाखा (तमिलनाडु, कर्नाटक, आंध्र प्रदेश एवं तेलंगाना) के तत्वावधान में दक्षिण भारत ज़ोन-1 युवा सम्मेलन का शानदार आयोजन 12 अक्टूबर को एएमकेएम,

पुरुषवाक़्म में सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम में डॉ. समकित मुनिजी म. सा. का दिव्य सान्निध्य प्राप्त हुआ। इस अवसर पर राष्ट्रीय, प्रांतीय एवं युवा शाखा के पदाधिकारी, विभिन्न योजनाओं के प्रतिनिधिगण, कर्नाटक एवं आंध्र-तेलंगाना से पधारे युवा प्रतिनिधि मंडल तथा मुख्य अतिथि के रूप में युवा सम्मेलन शिरोमणिश्री अनिल सिंघवी की उपस्थिति रही। इस दौरान गुड लक अकाउंट योजना के

अंतर्गत बच्चों को पुरस्कार प्रदान किए गए। दक्षिण भारत के विभिन्न राज्यों से बड़ी संख्या में उपस्थित युवाओं ने एकता, सेवा और संगठन की भावना का सशक्त संदेश दिया। कार्यक्रम की सफलता में सक्रिय सहयोग देने वाले सभी आयोजकों, सहयोगी संस्थाओं एवं युवा शाखा के पदाधिकारियों के प्रति प्रांतीय युवा अध्यक्ष मनीष रांका ने हृदय से आभार व्यक्त किया।

चिंता नहीं, चिंतन करो, यह धर्म की राह है : पन्थास विमल पुण्यविजय

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

चेन्नई। किलपाँक स्थित एस.सी. शाह भवन में विराजित पन्थास प्रवर विमल पुण्यविजयजी म.सा. ने मंगलवार की धर्मसभा में कहा कि जब शरीर साधना में सहायक हो, तब वह धर्मकाय बन जाता है। उन्होंने कहा, गृहस्थ जीवन में चिंता अनिवार्य है, परंतु उस चिंता को चिंतन में रूपांतरित करना ही साधना का प्रारंभ है। गृहस्थ जीवन में अकस्मात कारण, अकाल मृत्यु, नास्तिकता और निंदा



के दंश सदा बने रहते हैं। विवेकहीनता का दिखावा, अविवेक और अधर्म को जन्म देता है। गुरुदेव ने कहा, निंदा करना जितना बड़ा पाप है, निंदा सुनना उससे भी बड़ा पाप है। निंदा पीठ पर वार करने के समान है। उन्होंने

साधु जीवन पर प्रकाश डालते हुए समझाया कि साधु जीवन इसलिए निष्पाप है क्योंकि वह निर्दोष, निस्पृह, निर्लेप, निर्पेक्ष और निश्चित जीवन है, जहां न चिंता है, न भय, न अपेक्षा।

उन्होंने कहा कि इच्छाओं का अभाव ही कर्मों को क्षीण करता है। पन्थास प्रवर ने कहा कि जब एक बूंद जल में असंख्य जीवों का बोध हो जाए, तब साधवानी साधना बन जाती है। साधु जीवन का प्रत्येक आचार आत्मबल का आधार है। गृहस्थ को भी चाहिए कि वह अपने जीवन को चिंता से चिंतन और विवेक की दिशा में मोड़े।



चेन्नई तेरापंथ महिला मंडल द्वारा ॐ भिक्षु जप अनुष्ठान

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

चेन्नई। यहां के साहूकारपेट स्थित तेरापंथ भवन में विश्व शांति की चेतना जगाने वाला ॐ भिक्षु जप अनुष्ठान अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के निर्देशन में, तेरापंथ महिला मंडल, चेन्नई के तत्वावधान में साध्वीश्री उदित

यशजी के पावन सान्निध्य में आयोजित हुआ। साध्वीश्री उदित यशजी की प्रेरणा, श्रम और मार्गदर्शन अत्यंत प्रेरणादायक रहा। उनके पावन सान्निध्य से यह अनुष्ठान सफल एवं प्रभावशाली रूप से सम्पन्न हुआ। अनुष्ठान नई ऊर्जा, गहन श्रद्धा और दृढ़ संकल्प के साथ सम्पन्न हुआ, सभा भवन में 181 साधकों की प्रत्यक्ष गरिमाय उपस्थिति

रही। जूय के माध्यम से लगभग 446 साधकों ने सहभागिता रही। कुल मिलाकर 627 साधकों ने इस महाजप अनुष्ठान में सहभागिता की। जप अनुष्ठान को सफल बनाने में अध्यक्ष हेमलता नाहर एवं मंत्री वंदना पगारिया एवं सभी पदाधिकारियों एवं संयोजिका डॉ संतोष नाहर एवं वनिता गेलडा एवं सम्पूर्ण टीम का सराहनीय सहयोग रहा।

मनुष्य का कर्म उसका पीछा कभी नहीं छोड़ता : संतश्री ज्ञानमुनि

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

बेंगलूरु। शहर के यलहंका स्थित सुप्रतिनाथ जैन संघ के तत्वावधान में चातुर्मासार्थ विराजित संतश्री ज्ञानमुनिजी ने कहा कि उत्तराध्ययन सूत्र प्रभु महावीर की अंतिम वाणी है। अगर मनुष्य उसका कुछ हिस्सा भी जीवन में उतार ले तो उसका जीवन सुधर जाएगा। महावीर भगवान की वाणी संसार पार करने वाली है। प्रभु को संसार का कल्याण कर लेना चाहिए। जीवन में रह कर मनुष्य ने सबको परख लिया है। प्रभु के अलावा कोई और तारने वाला नहीं है। प्रभु वाणी का ही मनुष्य को सहारा है। तेरहवां अध्यायन वित्त संभूति है। जीवन के कांटा निकालने का माध्यम वित्त संभूति होती है। कांटा साधक को

धर्म कार्य से रोकता है। माया, मिथ्यात्व और मिदान धर्म कार्य में रुकावट बनते हैं। मानव थोड़ा सा कर्म करके फल की उम्मीद करने लगता है। लेकिन ऐसा नहीं करना चाहिए। कर्म करते रहना चाहिए। समय आने पर उसका फल अपने आप ही मिल जाएगा। जब तक मोह, मिथ्यात्व और मिदान से दूर नहीं होंगे धर्म कार्य में लगना मुश्किल है। यह रोड ब्रेकर की तरह अवरोधक पैदा कर रहे हैं। संसार रास्ता है यहां जन्म लेने वाला मारता है। जन्म और मरण के बीच जो जीवन को धर्म कार्य में लगाते हैं, उनका जीवन सफल हो जाता है। वर्तमान में मनुष्य सजने संवर्ने में लगा है। लेकिन यह अंत समय में साथ देने वाला नहीं है। संसार की सभी विषय वासनाएं दुखकारी होती हैं। मनुष्य का कर्म उसका पीछा करता रहता है। कर्म किसी को नहीं छोड़ता है। केवल

सफेद वस्त्र पहनने से कोई साधु नहीं बन सकता है। साधु का मन पर नियंत्रण होना चाहिए। साधु बनना बहुत आसान है लेकिन भगवान प्रभु के मार्ग पर चलना मुश्किल होता है। जो उनके मार्ग पर चलते हैं वही स्व भिक्षु होते हैं। सभा में जीतो द्वारा संचालित साधु साध्वियों के स्वास्थ्य की जांच हेतु महावीर हॉस्पिटल के सदस्यों के साथ श्रमण आरोग्य योजना के संयोजक दिनेश खिवेसरा, कमेटी के सदस्य दिनेश लोडा, रूपचंद कुमट, सुनील लोडा, दिनेश पोतवाड़, चेतन झापुरा, राकेश दातेवासिष्ठ, सुरेन्द्र गुदेवा और शंकर दक उपस्थित रहे। सभा में कोषाध्यक्ष मनोहर लाल मुथा ने आभार व्यक्त किया । अध्यक्ष प्रकाशचंद कोठारी ने सभी का स्वागत किया। सभा का संचालन महामंत्री मनोहरलाल लुकड ने किया।



असमय किया गया भोजन जहर के सामान है : राष्ट्रसंत

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

चेन्नई। यहां के साहूकारपेट के जैन भवन में विराजित राष्ट्रसंत कमलमुनिजी कमलेश ने 14 अक्टूबर को अपने प्रवचन में कहा कि बिना समय में किया हुआ अनियंत्रित अमृत जैसा आहार भी जहर के रूप में परिवर्तित हो जाएगा। पाश्चात्य संस्कृति की जीवन शैली ने मानव को रोगों का घर बना दिया है। प्रवर्तक रमेश मुनिजी के जन्मदिन पर अखिल भारतीय जैन दिवाकर विचार मंच नई दिल्ली द्वारा सप्त दिवसीय आयुर्वेदिक न्यूरो चिकित्सा शिविर को संबोधित करते हुए कहा कि हमारा शरीर प्रकृति के पांच तत्वों से बना हुआ है, जब वह असंतुलित होते हैं तो हम लोगों के

शिकार बनते हैं। उन्होंने कहा कि जब तक प्रकृति की गोद में नैसर्गिक जीवन नहीं जिएंगे तब तक लाख दवाई ले ले शरीर निरोग कहां से होगा। प्रकृति अपने आप में सबसे बड़ा डॉक्टर और सबसे बड़ी औषधि है पुरानी कहावत है 'सौ मिर्ज की एक दवा सिर्फ हवा।' मुनि कमलेश ने बताया कि आज व्यक्ति के विलासिता पूर्ण जीवन बीमारियों को खुला निर्मंत्रण दे रहा है। देर रात तक खाने से उसका असर किडनी हार्ट और लीवर पर पड़ता है। विज्ञान और विश्व प्रसिद्ध डॉक्टर का कहना है सोने से 4 घंटे पहले भोजन करोगे, तभी उसका तत्व बनेगा पोषक तत्व से शरीर पोषित होगा। नहीं तो एसिडिटी अल्सर किडनी और लीवर जैसे जैसी बीमारियां घर करेंगी।

जैन संत ने कहा कि उपवास और तपस्या बीमारियों को दूर करने के लिए रामबाण औषधि है। भूख से मरने वालों की संख्या कम है ज्यादा खा खाकर बनने वालों की संख्या ज्यादा है। जैन संत ने कहा कि परिश्रम करके जितना पसीना बहाएंगे उतनी बीमारियों से मुक्ति मिलती जाएगी। उन्होंने कहा कि स्वाद के लिए भोजन करेंगे तो कोलेस्ट्रॉल ब्लड प्रेशर शुगर जैसी बीमारियों से शरीर को खराब करेंगे और भोजन को स्वास्थ्य के लिए वरदान साबित होगा। कर्मवीर सेवा के प्रमुख डॉ प्रदीप मराठा सहयोगी ज्योति राठौड़ दीपिका बोरासी के द्वारा निशुल्क चिकित्सा सेवा प्रदान करने पर अजीत कोठारी दिलीप छाजेड़ ने सम्मानित किया।



शतरंज टूर्नामेंट में 120 प्रतिभागियों ने जीते पुरस्कार जयगोपाल गरोडिया मेमोरियल शतरंज अकादमी का आयोजन

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

चेन्नई। यहां जयगोपाल गरोडिया मेमोरियल शतरंज अकादमी हर साल स्कूली बच्चों के लिए विभिन्न स्तरों – अंडर 7, अंडर 9, अंडर 11, अंडर 13 और अंडर 17 (लड़के और लड़कियां) के लिए राज्य स्तरीय ओपन रैपिड शतरंज टूर्नामेंट आयोजित करती है। अकादमी ने स्कूली बच्चों के लिए अपनी रजत जयंती राज्य स्तरीय ओपन रैपिड शतरंज टूर्नामेंट का आयोजन श्रीमती दुर्गादेवी चौधरी वियेकानंद विद्यालय, शक्तिवेल नगर

में किया। इस टूर्नामेंट में तमिलनाडु भर से लगभग 778 छात्रों ने भाग लिया। टूर्नामेंट का उद्घाटन 12 अक्टूबर को हुआ। इसका उद्घाटन मुख्य आयोजन सचिव एवं प्रधानाचार्य जे. तनुकृष्णन और टूर्नामेंट निदेशक एन.के. नंद कुमार द्वारा दीप प्रज्वलित कर किया गया। समारोह का समापन रविवार को शाम 6.30 बजे हुआ। मुख्य अतिथि ग्रैंड मास्टर इनियन पन्नीरसेल्वम, भारतीय राष्ट्रीय शतरंज चैंपियनशिप-2005 ने समापन समारोह की अध्यक्षता की और पुरस्कार वितरित किए। इस अवसर पर प्रबंध न्यासी अशोक केडिया, न्यासी एवं सचिव एरा

मयप्पन, मुख्य प्रशिक्षक वासुदेवन और पीडी शतरंज संघ के अध्यक्ष सी.बी. राजगोपालन, जयगोपाल गरोडिया माध्यमिक विद्यालय, एसआरपी स्कूल की प्रधानाचार्या आर. हेमामालिनी उपस्थित थीं। कुल मिलाकर 120 शतरंज प्रतिभागियों ने पुरस्कार जीते। सभी श्रेणियों (लड़के और लड़कियों) में प्रथम पांच स्थान प्राप्त करने वालों को नकद पुरस्कार, ट्रॉफी और प्रमाण पत्र दिए गए। छठे से बारहवें स्थान पर आने वालों को ट्रॉफी और प्रमाण पत्र दिए गए। कुल मिलाकर 57,500 रुपए नकद पुरस्कार के रूप में दिए गए। सभी प्रतिभागियों को भागीदारी प्रमाण पत्र दिए गए।

अशोक मोदी शहरी एवं ग्रामीण विकास प्रकोष्ठ के जिला सचिव नियुक्त

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

चेन्नई। भारतीय जनता पार्टी तमिलनाडु इकाई द्वारा प्रवासी एस अशोक मोदी को शहरी एवं ग्रामीण विकास प्रकोष्ठ चेन्नई पश्चिम का जिला सचिव नियुक्त किया गया

है। अशोक मोदी पिछले कई वर्षों से भारतीय जनता पार्टी में अनेक पदों पर अपनी सेवाएं दे चुके हैं और वर्तमान में कई सामाजिक संस्थाओं से जुड़कर समाज कल्याणार्थ कार्य कर रहे हैं। मोदी की नियुक्ति से प्रवासियों एवं कमेटी कार्यकर्ताओं में खुशी की लहर है।

आत्मजागरण ही जीवन का सच्चा उद्देश्य है : साध्वी आगमश्री

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

बेंगलूरु। मनुष्य का जीवन केवल भौतिक सुखों की खोज में व्यतीत करने के लिए नहीं है, बल्कि यह आत्मा के जागरण का अमूल्य अवसर है। जब आत्मा जाग्रत होती है, तब समस्त मोह, द्वेष, और आसक्ति का अन्त हो जाता है। जो स्वयं को जान लेता है, वह संसार को जान लेता है। यही जैन दर्शन का सार है। ये विचार साध्वी आगमश्री ने विल्सन गार्डन जैन स्थानक में अपने प्रवचन में व्यक्त किए।

उन्होंने कहा कि जब व्यक्ति आत्मा को पहचानता है, तब उसे बाहरी दुनिया में सुख ढूँढने की

आवश्यकता नहीं रहती। आत्म-चिंतन, संयम, और अहिंसा के मार्ग पर चलने वाला साधक धीरे-धीरे कर्मबंधन से मुक्त होता जाता है। साध्वी धैर्याश्री ने कहा कि धर्म का आरंभ बाह्य रूप से नहीं, भीतर से होता है। आत्मा में जब नम्रता, क्षमा और मैत्री का उदय होता है, तब वही आत्मा प्रभु के समीप पहुँचती है। प्रभु का संदेश केवल सुनने के लिए नहीं, उसे अपने जीवन में उतारने के लिए है। जब हम हर क्षण जाग्रत रहते हैं, तब ही आत्मा की यात्रा मोक्ष की ओर अग्रसर होती है। वेयरसैन मीठालाल मकाणा ने स्वागत किया।

अध्यक्ष नेमीचंद भंसाली ने आभार व्यक्त किया। मंत्री सज्जनराज बोहरा ने संचालन किया।